4

''आरोपियों की तरह दोषी!''

(1:18-25)

पिछले पाठ में हमने पौलुस के विषय कथन पर ध्यान दिया था।

> क्योंकि मैं सुसमाचार से नहीं लजाता, इसलिए कि वह हर एक विश्वास करने वाले के लिए, पहिले तो यहूदी, फिर यूनानी के लिए उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ है। क्योंकि उस में परमेश्वर की धार्मिकता विश्वास से, और विश्वास के लिए प्रकट होती है; जैसा लिखा है, कि विश्वास से धर्मी जन जीवित रहेगा (1:16, 17)।

ऐसे दावे के बाद हम पौलुस के परमेश्वर के प्रेम के बारे में बताने की उम्मीद करते होंगे। इसके बजाय उसने अपना ध्यान परमेश्वर के क्रोध की ओर लगाया। आयत 18 कहती है, ''परमेश्वर का क्रोध तो उन लोगों की सब अभक्ति और अधर्म से प्रकट होता है।'' आयत 16 में पौलुस ने परमेश्वर के प्रेमी उपाय ''सब के लिए'' की विश्वव्यापी प्रकृति पर ज़ोर दिया था; अब उसे उस उपाय के लिए विश्वव्यापी आवश्यकता को स्थापित करना आवश्यक था। इसके अलावा पौलुस ने घोषणा की थी कि उद्धार यहूदियों और अन्यजातियों दोनों के लिए है। अब उसने यह स्पष्ट करना था कि ''यहूदी और यूनानी दोनों ... पाप के वश में हैं'' (3:9)। 1:18-32 में पौलुस के मन में मुख्यतया यूनानी, 2:1-3:8 यहूदी और 3:9-20 में सारी मनुष्यजाति थी।

यह पाठ 1:18-25 के बारे में है। पूरे वचन में ''के लिए'' और ''क्योंकि'' शब्दों को जोड़ने के लिए देखें। कई अनुवादकों ने स्पष्ट रूप से यह सोचा कि इन सभी ''संयोजकों'' के बिना पाठक आसानी से पढ़ लेंगे और कुछ एक को छोड़ दिया, पर हर शब्द महत्वपूर्ण है। जॉन आर. डब्ल्यू स्टॉर्ट ने ''लिखा है कि पौलुस द्वारा कही गई हर बात यूनानी संयोजक *gar* या *dioti* से जुड़ती है, जिसका अर्थ 'के लिए' या 'क्योंकि है।' ''[1] प्रेरित ने अन्यजातियों के विरुद्ध अपनी बात बड़े संयोजक ढंग से परत दर परत बताई।

सुझाव दिया गया है कि 1:18 से पहले ''सुनो सुनो! सुनो सुनो! दरबार लग चुका है!'' शब्द जोड़े जा सकते थे।[2] पौलुस ने अपना केस ऐसे दिया कि जैसे वह अदालत में हो। जहां भी उसने *gar* या *dioti* की बात की, वहां वह वास्तव में उठाई जा सकने वाली आपत्ति का उत्तर दे रहा था।[3] यह देखने के लिए पौलुस के विचार कैसे विकसित हुए, हम प्रेरित और एक विरोधी के बीच में कई दृश्यों की कल्पना करते हैं।

आरोपः पाप का दोषी (1:18)

काल्पनिक बातचीत

विरोधी: ''आपने कहा था कि लोगों को धर्मी मानने का परमेश्वर का प्रबन्ध सुसमाचार में

प्रकट किया गया है। क्योंकि परमेश्वर तो प्रेम करने वाला परमेश्वर है, इसलिए वह किसी को दोषी नहीं ठहराएगा, तो सचमुच में ऐसे प्रबन्ध की आवश्यकता है?''

पौलुस: ''हां, है, क्योंकि परमेश्वर क्रोध करने वाला परमेश्वर भी है। हर कोई पापी है और परमेश्वर का क्रोध पाप को दण्ड देने की मांग करता है!''

जागृत करने वाला वचन

वचन आरम्भ होता है, ''परमेश्वर का क्रोध तो उन लोगों की सब अभक्ति और अधर्म पर स्वर्ग से प्रकट होता है'' (1:18)। जैसे परमेश्वर की धार्मिकता प्रकट हुई है (आयत 17) वैसे ही परमेश्वर का क्रोध भी है। सुसमाचार में प्रकट की गई है (आयतें 16, 17) परमेश्वर का क्रोध बाइबल में, इतिहास में और (जैसा कि हम देखेंगे) वर्तमान जीवन में प्रकट हुआ है। इसके सुसमाचार में प्रकट होने की बात सोचना भी गलत नहीं है, क्योंकि परमेश्वर के न्याय की अवधारणाओं को उद्धार की कहानी से निकाला नहीं जा सकता। पौलुस का ज़ोर इस तथ्य पर है कि यह प्रकाशन ''स्वर्ग से'' है। यह शिक्षा कि परमेश्वर को पाप को दण्ड देना आवश्यक है, पौलुस के मन की कल्पना नहीं, बल्कि स्वयं परमेश्वर की ओर से मिली है।

परमेश्वर का क्रोध ''सब अभक्ति और अधर्म पर'' है। अनुवादित शब्द ''अभक्ति'' (*asebeia*) में ''परमेश्वर के व्यक्तित्व के अपमान'' का विचार पाया जाता है।[4] ''अधर्म'' (*adikia*) ''बुराई या गलती, जैसे व्यक्तियों के बीच के लिए व्यापक शब्द है।''[5] दोनों शब्द मिलकर हर प्रकार के पाप को समेट लेते हैं, चाहे वह परमेश्वर के विरुद्ध हो या मनुष्य के। परमेश्वर पाप के प्रति निष्क्रिय नहीं है। हर पाप उसके क्रोध को भड़काता ही है।

परमेश्वर के क्रोध का विषय नज़रअन्दाज़ कर दिया गया है। इसका एक कारण यह है कि कइयों को प्रेमी परमेश्वर के विचार के साथ क्रोध करने वाले परमेश्वर की अवधारणा को मिलाना कठिन लगता है। परमेश्वर के प्रेम को न समझते हुए वे तर्क देते हैं, ''निश्चय ही प्रेम करने वाला परमेश्वर कभी हम से नाराज़ नहीं हो सकता! वह जानता है कि हम कमज़ोर हैं, सो बिना किसी शक के वह हमारी कमियों को अनदेखा कर देगा!''

इससे जुड़ी एक समस्या यह है कि कुछ लोग ''क्रोध'' शब्द को लेकर उसे मनुष्य के क्रोध से मिला देते हैं। हमारा क्रोध आमतौर पर छोटी छोटी बातों पर और स्वार्थ और कई बार बदला लेने वाला होता है।[6] बाइबल क्रोध में पाए जाने वाले खतरों और आमतौर पर इस विनाशकारी भावना से बचने की आवश्यकता पर निर्देश के बारे में चेतावनियां देती हैं (देखें मत्ती 5:22; गलातियों 5:19-21; इफिसियों 4:31; कुलुस्सियों 3:8; याकूब 1:19, 20)। तौभी बाइबल फिर भी ''परमेश्वर के क्रोध'' की बात करती है। स्पष्टतया हमें समझने की आवश्यकता है कि इस शब्द से परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए लेखकों का क्या अर्थ है।

परमेश्वर पर लागू करने पर, अनुवादित शब्द ''क्रोध'' (*orge*) का अर्थ ''बुराई के प्रति ईश्वरीय प्रतिक्रिया'' होता है; यह ''जज की ओर से जायज भावना'' है।[7] डेव मिलर ने इसे ''परमेश्वर का न्यायिक क्रोध'' कहा है।[8] लियोन मौरिस ने इस शब्द की परिभाषा ''हर उस चीज़ के लिए जो बुराई है, परमेश्वर के पवित्र स्वभाव का स्थापित और सक्रिय विरोध'' के रूप में की है।[9]

परमेश्वर का पवित्र स्वभाव मांग करता है कि वह पाप को दण्ड दे। डी. स्टुअर्ट ब्रिस्को ने

परमेश्वर के क्रोध को ''अपवित्र को पवित्र जवाब, अधर्मी को धर्मी प्रतिक्रिया, अशुद्धता को शुद्ध रूप से ठुकराना'' कहा है।[10] स्टॉट ने लिखा है, ''[परमेश्वर के क्रोध को] बुराई से बढ़कर और कोई नहीं भड़काता और बुराई हमेशा भड़काती है।''[11]

कई टीकाकारों ने परमेश्वर के पवित्र क्रोध को मनुष्य जाति के स्वार्थी क्रोध की तरह बनाने की इतनी कोशिश की है कि उन्होंने परमेश्वर पर लागू किए जाने पर (क्रोध) शब्द को पूरी तरह से व्यक्तिगत बना दिया है। इस बात को समझें कि परमेश्वर के नियम उसकी अभिव्यक्ति है, जो वह है। जब कोई परमेश्वर के नियमों को तोड़ता है, तो वह परमेश्वर के विरुद्ध भी पाप कर रहा होता है। पाप व्यक्तिगत है और परमेश्वर का जवाब भी व्यक्तिगत। यह आवेश में नहीं, बल्कि व्यक्तिगत है।

जब हम ''परमेश्वर का क्रोध'' वाक्यांश को सुनते हैं तो सम्भवतया हमारे ध्यान में न्याय के समय ''आने वाला क्रोध'' (1 थिस्सलुनीकियों 1:10) ही आता है। (रोमियों 2:5 की तरह) में ''क्रोध'' शब्द का इस्तेमाल इसी अर्थ में किया गया है, परन्तु यह दूसरी तरह से भी इस्तेमाल किया गया है। उदाहरण के लिए इसका इस्तेमाल सरकारी कानून तोड़ने वालों के लिए दण्ड देने के लिए किया गया है (13:4) 1:18 में इसके इस्तेमाल के बारे में ध्यान दें कि वर्तमान काल का इस्तेमाल हुआ है: ''परमेश्वर का क्रोध ... अभक्ति और अधर्म पर ... प्रकट होता है!'' NIV में ''प्रकट हो रहा है।'' 1:18 वाला ''क्रोध'' अतीत या भविष्य में नहीं बल्कि वर्तमान में था।

परमेश्वर के वर्तमान क्रोध में आरोप लगाने वाला विवेक (देखें 2:15) और परमेश्वर से अलग होने के कई परिणाम शामिल हैं (देखें यशायाह 59:1, 2; रोमियों 9:3)। परन्तु 1:18 के बिल्कुल निकट के संदर्भ में, पौलुस के मन में पाप के परिणाम भुगतने के लिए छोड़े जाने का ईश्वरीय दण्ड था। अध्याय 1 में पौलुस ने तीन बार कहा, ''परमेश्वर ने उन्हें छोड़ दिया'' (आयतें 24, 26, 28)। हमारा अगला पाठ इस ठण्डे वाक्यांश पर केन्द्रित होगा।

निर्विवाद निष्कर्ष

अभी के लिए हम पौलुस के द्वारा लगाए गए आरोप पर ध्यान लगाना चाहते हैं। मैं उसे यह ज़ोर देते हुए कहने की कल्पना कर सकता हूं, परमेश्वर का क्रोध प्रकट हुआ है क्योंकि लोग माने या न माने, पर वे परमेश्वर के विरुद्ध और एक-दूसरे के विरुद्ध पाप करते हैं। वे दण्ड के योग्य हैं!

प्रमाण: दबाई गई जानकारी (1:18-19)

काल्पनिक बातचीत

विरोधी: ''आप इस बात पर ज़ोर क्यों देते हैं कि परमेश्वर हमसे नाराज है। आखिर जिस प्रकार यहूदियों के पास लिखित व्यवस्था थी, हम अन्यजातियों को तो यह व्यवस्था नहीं दी गई। परमेश्वर हम से नाराज क्यों होगा जबकि हमें इतनी इच्छी तरह पता नहीं है?''

पौलुस: ''तुम अन्यजातियों को अधिक पता था, यह हो सकता है कि तुम्हारे पास लिखित व्यवस्था नहीं थी, पर तुम्हारे पास प्रकाशन था। तुमने उस ज्ञान को जो तुम्हें दिया गया दबा दिया। एक पल के लिए शक न करें कि आप अपने पापी होने के लिए ज़िम्मेदार हैं।''

जागृत करने वाला वचन

यह कहने के बाद कि ''परमेश्वर का क्रोध तो सब अभक्ति और अधर्म से प्रकट होता है'' (आयत 18क)। पौलुस ने आगे कहा, ''जो सत्य को अधर्म से दबाए रखते हैं, इसलिए कि परमेश्वर के विषय का ज्ञान उनके मनों में प्रकट है, क्योंकि परमेश्वर ने उन पर प्रकट किया है''[12] (आयतें 18ख, 19)। आयत 18 में ''सत्य'' उस ''सब सत्य'' को नहीं कहा गया (देखें यूहन्ना 16:13), बल्कि उस सच्चाई को कहा गया है, जो परमेश्वर ने अन्यजातियों को दी थी। आयत 25 इसे परमेश्वर की सच्चाई कहती है (RSV)। आयत 21 कहती है कि ''वे परमेश्वर को जानते'' थे, जबकि आयत 32 यह संकेत देती है कि उन्हें मालूम था कि गलत काम करने वाले दण्ड के भागी होंगे।

एक और दो अध्यायों में दो विशेष ढंग बताए गए हैं, जिन से परमेश्वर ने अन्यजातियों पर अपने आपको और अपनी इच्छा को प्रकट किया था: सृष्टि (1:20) और विवेक (2:15)। हम अन्यजाति संसार को दिए परमेश्वर के विशेष और व्यक्तिगत प्रकाशन जोड़ सकते हैं। परमेश्वर ने यहूदी जाति को अलग करके उन्हें एक लिखित व्यवस्था दी (देखें 3:1, 2) जिस कारण हमें लग सकता है कि परमेश्वर की अन्यजातियों में कोई रुचि नहीं थी और उसने उन्हें कोई आत्मिक ''प्रकाश'' नहीं दिया। बाइबल ऐसे कई संकेत देती है कि ऐसा नहीं था। बर्टन कॉफमैन ने बाइबली प्रमाण के कई पन्ने दिए हैं कि परमेश्वर को केवल यहूदियों की ही नहीं, बल्कि सारी मनुष्य जाति की भी चिंता थी।[13] कुछ उदाहरणों पर विचार करें:

- मलकिसिदक ''परम प्रधान परमेश्वर का याजक'' था (उत्पत्ति 14:18)। परन्तु वह अब्राहम का वंशज नहीं था।
- बिलाम पर परमेश्वर का आत्मा उतरा (गिनती 24:2), परन्तु वह इस्राएली नहीं था।
- परमेश्वर ने योना को नीनवे में भेजा (योना 1:2), जो एक अन्यजाति नगर था।
- अलीशा ने नामान को चंगा किया (2 राजाओं 5), जो एक अन्यजाति सिपाही था।
- अन्यजाति पण्डितों को किसी न किसी तरह यहूदी मसीहा के बारे में पता चला (मत्ती 2)।

हम हठ नहीं कर सकते कि परमेश्वर ने अन्यजातियों पर अपने आपको कैसे, कब या कहां प्रकट किया था या उन्हें क्या प्रकाशन दिए थे। परन्तु दो बातें हमें पता चल सकती हैं। पहली तो यह कि परमेश्वर का प्रकाश कभी अस्पष्ट या अनिश्चित नहीं था। यानी यह समझ आने वाला था। पौलुस ने कहा, ''इसलिए कि परमेश्वर के विषय का ज्ञान उनके मनों में प्रकट है, क्योंकि परमेश्वर ने उन पर प्रकट किया है'' (रोमियों 1:19)। REB कहता है, ''जो कुछ परमेश्वर के बारे में जाना जा सकता है, वह उनकी आंखों के सामने स्पष्ट है।'' नॉक का अनुवाद कहता है कि ''परमेश्वर ने उन पर अपने आपको स्पष्ट किया।''

दूसरा, उन्हें परमेश्वर के प्रकाशन जमा करने के बजाय अन्यजातियों ने इसे दबा लिया था। आयत 18 में ''अनुवादित शब्द दबाए रखा'' (*katecho*) ''नीचे'' (*kata*) के साथ ''रखना'' (*echo*) के लिए शब्द के उपसर्ग को मिलाने वाला एक मिश्रित शब्द है। *Katecho* का इस्तेमाल

सकारात्मक अर्थ में हो सकता है (1 कुरिन्थियों 11:2 में देखें ''पालन करते हो''), पर 1:18 में इसके इस्तेमाल की तुलना पहलवान द्वारा विरोधी को ''नीचे दबाकर'' रखने से की जा सकती है जिससे वह छूट न सके।[14] CEV कहता है कि अन्य जातियों ने ''सच्चाई को मसल [दिया]'' था।

हो सकता है अन्यजातियों को उतनी आत्मिक रौशनी न मिली हो जितनी यहूदियों को मिली थी, पर उन्हें रौशनी दी अवश्य गई थी। अफसोस की बात है कि उस अधिकतर भाग में उन्होंने परमेश्वर द्वारा उन्हें दी गई रौशनी को बुझा दिया था। उनकी तुलना अपने रास्ते में रौशनी करने के लिए केवल एक लालटेन लेकर अंधेरे में से जा रहे आदमी से की जा सकती है, जो फिर बत्ती की ओर मुड़कर उसे बुझा देता है। ''उनका निर्बुद्धिमन अंधेरा होगा'' (1:21), परन्तु उस अंधेरे के ज़िम्मेदार वे स्वयं थे। कितना दर्दनाक है!

अन्यजातियों ने इतनी मूर्खता से काम क्यों किया था? पौलुस ने कहा कि उन्होंने सच्चाई को ''अधर्म से'' दबा दिया था (आयत 18ग)। ''अधर्म'' यहां सामान्य अर्थ में पाप को कहा गया है (देखें 1 यूहन्ना 5:17)। जब आपके जीवन में पाप हो, तो सच्चाई आपको परेशान, बेचैन, दुखी कर सकती है। ऐसा हो तो आप दोनों में से एक ओर जा सकते हैं: आप अपने पाप से पीछा छुड़ा सकते हैं या फिर आप सच्चाई से मुंह मोड़ सकते हैं। अन्यजातियों में से अधिकतर ने बाद वाला रास्ता चुना था। फिर से ध्यान दें कि पौलुस ने वर्तमान काल का इस्तेमाल किया: ''जो सत्य को दबाए रखते हैं।'' यह केवल अतीत में किया गया काम नहीं था, बल्कि यह तो वह काम था जिसे वे निरन्तर कर रहे थे।

निर्विवाद निष्कर्ष

इस प्रकार पौलुस ने अपना मुकदमा रखा। एक बार फिर मैं उसे अपने विरोधी का सामना करते हुए देखने की कल्पना करता हूं। मैं उसे यह कहते सुनता हूं, ''अन्यजातियों को परमेश्वर को और उसकी इच्छा को जानने का अवसर मिला था। पर उन्होंने उस सच्चाई को जो परमेश्वर ने उन्हें दी थी, दबा दिया। वे लगाए गए आरोप के दोषी हैं!''

प्रमाण: जानबूझकर अनजान (1:20)

काल्पनिक बातचीत

विरोधी: ''हो सकता है कि परमेश्वर ने अपने आपको अन्यजातियों पर इधर-उधर कहीं विशेष अवसरों पर प्रकट किया हो; पर क्योंकि हमें यह पता नहीं चल सकता कि अन्य जातियों को दिए गए प्रकाशन क्या थे, इसलिए हर जगह सब अन्यजातियों को दोषी ठहराना उचित नहीं है। निश्चय ही अन्यजातियों की बहुगिनती को क्षमा किया जा सकता है!''

पौलुस: ''किसी के पास कोई बहाना नहीं है। अन्य प्रकाशनों के बारे में जो उन्हें दिए गए थे, प्रकृति में उन्हें परमेश्वर का अपना प्रकाशन मिला था। वे उसकी बनाई हुई चीज़ों में घिरे हुए हैं। वे सूरज, चांद, तारों को देख सकते हैं। फिर मैं यह ज़ोर देता हूं कि उनके पास कोई बहाना नहीं है!''

जागृत करने वाला वचन

आयत 19 में पौलुस ने दो बार कहा कि परमेश्वर के बारे में कुछ सच्चाई सब पर ''स्पष्ट'' होनी चाहिए। आयत 20 में उसने इसके सच होने का एक कारण दिया: ''उसके अनदेखे गुण, अर्थात उसकी सनातन सामर्थ और परमेश्वरत्व, जगत की सृष्टि के समय से उसके कामों के द्वारा देखने में आते हैं'' (आयत 20क)।

कहते हैं कि परमेश्वर ने अपने दो ''प्रकाशन'' दिए हैं, जिनमें एक अपने संसार (*world*) में ''प्राकृतिक'' प्रकाशन है और दूसरा उसके वचन (*Word*) में उसका ''अलौकिक'' प्रकाशन है। भजन संहिता 19 में दाऊद ने दोनों की बात की। भजन के पहले भाग में दाऊद ने प्राकृतिक प्रकाशन की बात लिखी: ''आकाश ईश्वर की महिमा वर्णन कर रहा है; और आकाशमण्डल उसकी हस्तकला को प्रकट कर रहा है'' (आयत 1) इस भजन का अन्तिम भाग अलौकिक प्रकाशन पर केन्द्रित है: ''यहोवा की व्यवस्था खरी है, वह प्राण को बहाल कर देती है; यहोवा के नियम विश्वासयोग्य हैं, साधारण लोगों को बुद्धिमान बना देते हैं'' (आयत 7)।

पौलुस जब लुस्त्रा में था तो उसने परमेश्वर के प्राकृतिक प्रकाशन की बात की। उसने अपने सुनने वालों को परमेश्वर का यह विवरण दिया:

> ... जीवते परमेश्वर ... जिस ने स्वर्ग और पृथ्वी और समुद्र और जो कुछ उन में है बनाया है। उसने बीते समयों से ... अपने आपको बे-गवाह न छोड़ा; किन्तु वह भलाई करता रहा, और आकाश से वर्षा और फलवन्त ऋतु देकर, तुम्हारे मन को भोजन और आनन्द से भरता रहा (प्रेरितों 14:15ख-17)।

वर्तमान वचन पाठ में पौलुस ने वर्तमान में संसार की सृष्टि और ''जो बनाया गया है'' की बात की। आज ''पढ़े-लिखे'' लोग यह ज़ोर देते हैं कि कोई विशेष सृष्टि नहीं बनी थी, बल्कि संसार की हर चीज़ धीरे धीरे विकसित हुई है। पौलुस जो न केवल पढ़ा-लिखा था, बल्कि परमेश्वर की प्रेरणा पाया हुआ भी था, सृष्टि को मानता था; उसने सिखाया कि हर चीज़ को बनाया गया था।

उस सब को देखते हुए, जो परमेश्वर ने बनाया है, पौलुस यह ज़ोर देता था कि हम उसके बारे में सब कुछ तो नहीं पर कुछ बातें जान सकते हैं। पौलुस संसार को देखकर उन बातों को बता सकता था, और हम भी निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि वह है। नियम बड़ा आसान है जिसे बच्चे को भी समझने में दिक्कत नहीं होगी कि हर चीज़ का बनाने वाला कोई न कोई है। हमने घड़ी का एक उदाहरण इस्तेमाल किया है जिसमें घड़ी का अस्तित्व यह घोषणा करता है कि घड़ी को बनाने वाला कोई है। इब्रानियों का लेखक एक अलग उदहारण का इस्तेमाल करता है: ''क्योंकि हर एक घर का कोई न कोई बनाने वाला होता है, परन्तु जिसने सब कुछ बनाया वह परमेश्वर है (इब्रानियों 3:4)।''

परन्तु पौलुस का उद्देश्य यह साबित करना नहीं था कि परमेश्वर है। किसी उच्च शक्ति के अस्तित्व के बारे में लगभग हर जगह सहमति पाई जाती है। इसके बजाय प्रेरित का ज़ोर इस बात पर था कि परमेश्वर कौन है जिसे पौलुस ने उसके ''अनदेखे गुण'' कहा। यूनानी धर्मशास्त्र में उसकी अदृश्य बातें हैं (देखें KJV)। NIV में ''परमेश्वर के अदृश्य गुण'' हैं।

''उसके अनदेखे गुण ... देखने में आते हैं'' शब्दों में विरोधाभास लगता है। अनुवादित शब्द ''देखने'' (kathorao का एक रूप) ''देखना'' के अर्थ वाले (horao) शब्द के साथ उपसर्ग (horao) शब्द के साथ उपसर्ग (kata) को मिलाता है। नये नियम में kathorao का अर्थ ''देखना, पहचानना''[15] अर्थात केवल आंखों से देखना नहीं, बल्कि ''मन से समझना-बूझना'' है।[16]

परमेश्वर के कौन से ''अनदेखे गुण'' उसकी सृष्टि में ''देखे'' जा सकते हैं। पौलुस ने दो गुण बताए हैं। पहला तो ''उसकी सनातन सामर्थ [dunamis] है।'' परमेश्वर इतना सामर्थी है कि जब उसने कहा, ''उजियाला हो'' तो ''उजियाला हो गया'' (उत्पत्ति 1:3)। मैं प्रभु की उस एक बात से पैदा हुई शक्ति की कल्पना आरम्भ करने की बात भी नहीं सोच सकता।

परमेश्वर का दूसरा गुण उसकी सृष्टि में ''देखने'' में आ सकता है, जो उसका ''परमेश्वरत्व'' है। ''परमेश्वर'' *theos* के लिए एक शब्द *theiotes* का अनुवाद है। *Theiotes* परमेश्वर की विशेषताओं को दर्शाता है।[17] NCV में *theiotes* का अनुवाद ''सब बातें जो उसे परमेश्वर बनाती'' हैं, के रूप में है।

पौलुस ने कहा कि परमेश्वर के स्वभाव को ''बनाई हुई वस्तुओं के द्वारा समझा'' जा सकता है। हम अपने आस-पास नज़र दौड़ाने पर बनाने वाले की खूबियों को पहचान सकते हैं। प्राकृतिक ''नियमों'' द्वारा चलाया जाने वाला संसार इस बात का संकेत देता है कि बनाने वाला व्यवस्थित है। यदि उसमें प्राकृतिक संसार में ''नियम'' दिए हैं (जैसे गुरुत्वाकर्षण का नियम) तो यह मानना तर्कसंगत है कि नैतिक और आत्मिक क्षेत्रों में भी इसके नियम हैं। यह तथ्य कि प्राकृतिक ''नियमों'' को तोड़ने पर अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है, यह सुझाव देता है कि यदि हम उसके नैतिक और आत्मिक आदेशों को नज़रअंदाज करते हैं तो दण्ड हमारी प्रतीक्षा करते हैं। इस विचार को विस्तार दिया जा सकता है। परमेश्वर के उपाय की भरपूरी परमेश्वर की बहुतायत की गवाही देती है। इस संसार की सुन्दरता परमेश्वर के स्वभाव की सुन्दरता के बारे में तथा और बातों के बारे में कुछ कहती है (देखें भजन संहिता 27:4)।

कई लोग ''प्राकृतिक थियोलॉजी'' की शिक्षा को बढ़ावा देने की कोशिश में रोमियों 1:20 और इससे जुड़ी आयतों का दुरुपयोग करते हैं। वे यह ज़ोर देते हैं कि हमें केवल परमेश्वर के बारे में जानने की आवश्यकता है और उसकी इच्छा का हमें प्रकृति से पता चल सकता है। ऐसा निष्कर्ष पौलुस की शिक्षा के लिए कलंक है। पौलुस ने कहा कि हम उसकी सृष्टि को देखकर सृष्टिकर्त्ता के बारे में कुछ बातें जान सकते हैं न कि यह कि हम सब बातें जान सकते हैं। अफ्रीका के एक जवान ने मनपरिवर्तन की कहानी इस प्रकार बताई:

> जब मैं छोटा लड़का था, नाइजीरिया के झाड़दार देश में इधर-उधर दौड़ता था, मुझे मालूम था कि परमेश्वर है। मैं पेड़ों के बीच में खड़ा हो जाता और रात को आकाश की ओर देखता और जानता कि किसी न किसी ने इस संसार को बनाया है, पर मुझे यह पता नहीं था कि उसका नाम क्या है। एक दिन एक मिशनरी हमारे गांव में बच्चों को पढ़ना सिखाने के लिए आई। उसने हमें बाइबल पढ़नी सिखाई। फिर मुझे परमेश्वर का नाम पता चला जिसने अपने आपको मुझ पर पेड़ों और सितारों के द्वारा प्रकट किया।[18]

केवल प्रकृति से ही कई निष्कर्ष निकाले नहीं जा सकते।[19] इनमें जो सबसे महत्वपूर्ण है, वह यह अद्‌भुत सच्चाई है कि जो परमेश्वर ने ''जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना इकलौता पुत्र दे दिया'' (यूहन्ना 3:16क)। किसी ने कहा है कि ''प्रकृति में हम परमेश्वर की उंगलियों के निशान देखते हैं ... पर हम पापियों को जो देखने की आवश्यकता है, वह मसीह के नाखूनों के निशान हैं।''[20] पाप के प्रति निरुत्तर होने के लिए प्रकृति से काफी कुछ सीखा जा सकता है, पर पाप के उद्धार के लिए यह काफ़ी नहीं है।

अथेने में तर्क के लिए ''प्रकृति के प्रकाश'' का इस्तेमाल करते हुए पौलुस ने संकेत दिया कि परमेश्वर ने मनुष्यों को प्रोत्साहित करने के लिए कि ''वे परमेश्वर को ढूंढें, ताकि उसे टटोलकर पाएं'' ''पृथ्वी और उसकी सब वस्तुओं को बनाया'' (प्रेरितों 17:24, 27)। लोग प्रकृति के द्वारा जो कुछ परमेश्वर के बारे में जान सकते हैं, वह उन्हें उसके बारे में और जानने के लिए प्रेरित करने वाला होना चाहिए। ऐसी इच्छा अन्ततः उन्हें परमेश्वर के अलौकिक प्रकाशन अर्थात बाइबल तक ले आने वाली होनी चाहिए। इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने कहा कि परमेश्वर ''अपने खोजने वालों को प्रतिफल देता है'' (इब्रानियों 11:6)। यीशु ने कहा, ''ढूंढो तो तुम पाओगे'' (मत्ती 7:7)।

अन्यजातियों ने पुरखाओं की अधिकतर सच्चाई को भुला दिया था। उन्होंने रह गए सच्चाई के टुकड़ों को तोड़ मरोड़ दिया था। तौ भी नदियां अभी भी बह रही थीं ... फूल अभी भी टूटे थे ... सूरज अभी भी चमकता था। तूफ़ान आने के बाद आकाश में धनुष अभी भी दिखाई देती थी ... और रात को तारे अभी भी टिमटिमाते थे। परमेश्वर ने अपने आपको बेगवाह नहीं छोड़ा था। अन्यजातियों के पास कुछ रौशनी थी पर उन्होंने उस रौशनी को नज़रअन्दाज़ कर दिया। वे इस सच्चाई के अनुसार जीवन नहीं बिता पाए थे, जो उन्हें मिली थी।

इसलिए पौलुस ने निष्कर्ष निकाला, ''यहां तक कि वे निरुत्तर हैं'' (रोमियों 1:20ख)। अध्याय 2 में रोमियों के सम्बन्ध में उसने यही आरोप लगाया (2:1)। इसका अर्थ यह नहीं है कि परमेश्वर की इच्छा को न मानने के लिए लोगों के पास अपने-अपने ''बहाने'' नहीं हैं। कहते हैं कि कोई आदमी बिना बटुए के मिल सकता है पर बिना बहाने के कभी नहीं मिलेगा। पौलुस का यह कहने का कि वे निरुत्तर हैं, अर्थ यह था कि किसी के पास परमेश्वर को न जानने और उसकी बात न मानने का कोई मान्य बहाना नहीं है। NEB में, उनके व्यवहार के लिए कोई सम्भावित विचार नहीं है।

निर्विवाद निष्कर्ष

कल्पना में मैं पौलुस को अन्यजातियों की ओर उंगली करते हुए देख सकता हूं, जब उसने कहा, ''परमेश्वर ने तुम्हें नज़रअन्दाज़ नहीं किया। उसे तुम्हारा ध्यान था और उसने तुम्हें यह अद्‌भुत संसार दिया था कि तुम उसे जान सको। परन्तु तुम ने जान-बूझकर उसके प्रकाशन की उपेक्षा की। इसलिए अब तुम्हारे पास कोई बहाना नहीं है।'' मैं उसे यह दोहराते हुए सुन सकता हूं कि ''तुम निरुत्तर हो, तुम निरुत्तर हो, तुम निरुत्तर हो!''

प्रमाणः घमण्डपूर्ण गुस्ताखी (1:21, 22)

काल्पनिक बातचीत

विरोधी: ''मुझे लगता है कि तुम अधिक ही कठोर हो! मनुष्य जाति के लिए परमेश्वर को जानना सदा सम्भव नहीं रहा था।''

समस्या यह नहीं थी कि लोग परमेश्वर को जान नहीं सकते, बल्कि यह थी कि उन्होंने परमेश्वर को जानना नहीं चाहा। ''उन्होंने परमेश्वर को पहचानना न चाहा'' [रोमियों 1:28]!

रौशन करने वाला वचन

हमारा वचन पाठ आरम्भ होता है, ''इस कारण कि परमेश्वर को जानने पर भी उन्होंने परमेश्वर के योग्य बड़ाई और धन्यवाद न किया'' (आयत 21क, ख)। मुझे ''परमेश्वर को जानने'' वाक्यांश पर टिप्पणी करनी पड़ेगी, क्योंकि कहीं और पौलुस ने यह ज़ोर दिया है कि अन्यजाति लोग ''परमेश्वर को नहीं जानते'' (गलातियों 4:8; देखें 1 कुरिन्थियों 1:21; 1 थिस्सलुनीकियों 4:5)। यहां पौलुस ज़ोर दे रहा था कि कालांतर में अन्यजातियां परमेश्वर को जानती थीं। परन्तु उन्होंने परमेश्वर द्वारा दिए गए अपने ज्ञान को दबा लिया था (रोमियों 1:18) इसलिए अब वे परमेश्वर से अनजान नहीं थीं।

वे इस स्थिति को कैसे समझती थी? पौलुस ने परमेश्वर से नीचे को जाने के मार्ग का विस्तृत ब्योरा देने लगा। उससे पहले अन्यजातियों ने ''उसकी बड़ाई'' नहीं की (आयत 21ख)। यूनानी शब्द (*doxazo*), का अनुवाद ''बड़ाई'' ''महिमा'' के लिए शब्द (*doxa*) के लिए किया गया है और मूल में इसका अर्थ ''महिमा देना'' है। लोगों को यह अहसास होना चाहिए कि प्रतापी सूर्यास्त वाला संसार केवल प्रतापी परमेश्वर ही बना सकता था। ऊंचे-ऊंचे पेड़ों और पहाड़ों वाले संसार को केवल प्रतापी परमेश्वर ही बना सकता है। आश्चर्यजनक अजूबों से भरे संसार को आश्चर्यजनक और अद्‌भुत परमेश्वर ही बना सकता था। पौलुस ने कहा कि अन्यजातियों ने परमेश्वर की विलक्षण महिमा को मानने से इनकार कर दिया।

दूसरी बार उन्होंने ''[उसका] धन्यवाद न किया'' (आयत 21ग)। उन्होंने अपनी नसों में बहने वाले जीवन की धारा को माना और उस हवा में सांस ली जो वह देता है (प्रेरितों 17:25)। उन्होंने उसके सूरज की धूप का मजा लिया और उसकी बारिश से लाभ उठाया था (मत्ती 5:45) उन्होंने उस भोजन को खाया, जो वह उपलब्ध कराता है और फलदायक मौसमों का आनंद लिया था (प्रेरितों 14:17)। उन्होंने उसके उन तथा और उपहारों का आनन्द तो लिया पर यह कहने के लिए आकाश की ओर कभी अपना मुंह नहीं उठाया कि ''हे परमेश्वर, तेरा धन्यवाद हो!''

हम आज भी उस संसार में रहते हैं, जो परमेश्वर की अद्‌भुत आशिषों के लिए उसे महिमा देना और उसका धन्यवाद करने में नाकाम रहता है। रोमियों 1:20 न केवल सामान्य अर्थ में संसार पर दोष लगाता है, बल्कि यह हम पर भी दोष लगाता है। हम आमतौर पर परमेश्वर से मिली आशिषों से ढूंढ़ना और उसे धन्यवाद देने में नाकाम रहते हैं, ''जो हमारे लिए सब कुछ बहुतायत से देता है'' (1 तीमुथियुस 6:17; याकूब 1:17)। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि नाशुक्रगुजारी जीवित परमेश्वर से दूर होने के कदमों में से एक है।

अन्यजाति संसार परमेश्वर को नज़रअन्दाज़ करता है। उसका परिणाम क्या है ? जब समीकरण में से परमेश्वर को निकाल दिया जाए तो यह संसार गिरता नहीं है; इसका कोई अर्थ नहीं रहता। युगों के बड़े प्रश्न कि ''हम कहां से आए ?'' ''हम यहां क्यों हैं ?'' ''हम कहां जा रहे हैं ?'' अनुत्तरित रहते हैं। ''जब हम परमेश्वर को छोड़ देते हैं तो हम अपने मानक या उस मुख्य बात को छोड़ देते हैं, जहां से हमने काम करना होता है।''[21]

जब अन्यजातियों ने परमेश्वर को नज़रअन्दाज़ किया, ''परमेश्वर को नज़रअन्दाज़ करके अन्यजातियों के लोग व्यर्थ विचार करने लगे, यहां तक कि उनका निर्बुद्धि मन अंधेरा हो गया'' (रोमियों 1:21) यूनानी धर्म शास्त्र में पाए जाने वाले तिरस्कार को सही ढंग से व्यक्त करना कठिन है। अनुवादित शब्द ''व्यर्थ (*mataios*) का अर्थ, परिणाम के बिना'' है।[23] अनुवादित शब्द ''विचार'' (dialogismas) का अर्थ ''तर्क देना'' (ASV) हो सकता है, इसलिए पौलुस के कहने का अर्थ यह था कि उनका तर्क बिना तर्क के उस TEV में कहा गया है कि उनके विचार ''बिलकुल बकवास'' हैं।

अनुवादित शब्द ''निर्बुद्धि'' (*asunetos*) का अर्थ, ''बिना समझ के है।''[24] RSV में इस शब्द का अनुवाद ''senseless'' जबकि CEV में ''stupid'' है। जब अन्यजातियों ने सच्चाई को जो परमेश्वर ने उसे दी थी, ठुकरा दिया तो उनके मन निर्बुद्धि, बिना परख करने वाले, नासमझ और मूर्ख बन गए। उनके मन अंधकार से भर गए थे। अपने मूर्खतापूर्ण तर्कों से उन्होंने परमेश्वर के उस प्रकाश को, जो उन्हें दिया गया था, बुझा दिया था।

ध्यान दें कि उसका ''मन ही अंधेरा'' हुआ था। कई लोग दावा करते हैं कि परमेश्वर को ठुकराना उनके तार्किक विचार का परिणाम है, परन्तु अविश्वास का आरम्भ मन से होता है, दिमाग से नहीं। इसका आरम्भ भावनाओं से होता है न कि तर्कपूर्ण विचार से। लोग परमेश्वर में विश्वास नहीं करना चाहते, इस कारण वे उसे ठुकराने के अपने ''कारण'' बना लेते हैं।

पौलुस का अत्यंत कठोर विश्लेषण आयत 22 में चरम पर पहुंचता है: ''वे अपने आप को बुद्धिमान जताकर मूर्ख बन गए।'' रोम और अन्य नगरों में वक्ताओं, विद्वानों, दार्शनिकों, राजनीतिज्ञों और लेखकों की भरमार थी, जो न केवल बुद्धिमान होने का दावा करते, जिनकी ''बुद्धि'' विश्व प्रसद्धि थी। पौलुस ने उन सब को एक ही शब्द ''निर्बुद्धि'' कहकर नकार दिया। ''निर्बुद्धि'' शब्द का समझ से कोई सम्बन्ध नहीं है, बल्कि इसका सम्बन्ध इस संसार को समझाने के प्रयास करने और अपने और अपनी इच्छा से परमेश्वर के प्रकाश से अलग संसार की बातें समझाने के प्रयास और परमेश्वर और उसकी इच्छा के प्रकाशन से अलग संसार की बातों से है। अनुवादित शब्द ''निर्बुद्धि'' (*moros*) का बहुवचन रूप है वह शब्द है, जिससे हमें अंग्रेज़ी का शब्द (''morons'') मिला है। पौलुस के अनुसार जब पढ़ा लिखा व्यक्ति दृढ़ता से परमेश्वर के प्रकाशन को नज़रअन्दाज़ करके अपना विचार व्यक्त करता है, तो वह ''पढ़ा-लिखा मूर्ख'' होता है। कॉफ़मैन ने इसे इस प्रकार कहा है: जो व्यक्ति ''Homo sapiens'' (''बुद्धिमान मनुष्य''[25]) होने के बावजूद परमेश्वर को नकारता है, वह ''Homo ignoramus'' (अज्ञानी मनुष्य) बन जाता है![26]

''[अपने आपको] बुद्धिमान बताने वाले लोग मूर्ख बन गए।'' पौलुस की बातों में न केवल इस संसार का वर्णन हुआ बल्कि ये हमारे समय का भी वर्णन करती हैं। हम पर दार्शनिक, वैज्ञानिकों और शिक्षाविदों की, ''बुद्धि'' से हमला किया जाता है, जो अपने अनुमानों तथा शिक्षाओं

में परमेश्वर को कदाचित शामिल नहीं करते। हमें ईश्वर रहित तर्क, नास्तिकता उपदेशों, तन्त्र-मन्त्र की बेकार बातें और मीडिया की बेतुकी बातों की ''मूर्खता'' सहनी पड़ती है।[27] संसार वहां डूब रहा है जिसे ग्लैन स्पेस में ''ऊंचे शोर वाला बकवास'' कहा गया है।[28]

निर्विवाद निष्कर्ष

अभी-अभी देखे गए भाग में आप पौलुस को संक्षिप्त करते हुए कैसे देखेंगे? मैं उसे आंखों में चमक के साथ यह कहने की कल्पना करता हूं कि ''जब लोगों को पता चल जाएगा कि 'मनुष्य का मार्ग उसके वश में नहीं है, मनुष्य चलता तो है, परन्तु उसके डग उसके अधीन नहीं हैं' [यिर्मयाह 10:23]? बिना परमेश्वर के मानवीय परख मूर्खता है, जो बिना समझ के, केवल अज्ञानता को इकट्ठा करना है!''

प्रमाण अपमानजनक मूर्तिपूजक (1:23, 25)

काल्पनिक बातचीत

विरोधी: ''मूर्खता? बिना समझ के? अज्ञानता का ढोंग? निश्चय ही आप अपनी बात को बढ़ा-चढ़ा कर कह रहे हैं?''

पौलुस: ''यदि कोई है, तो मैंने उसे कम कहा है। क्या आप चाहते हैं कि मैं विस्तार से समझाऊं कि मनुष्य जाति कितनी मूर्ख बन गई है? एक उदाहरण है: लोग लकड़ी, पत्थर, मिट्टी और धातु की मूर्तियां बनाते हैं और फिर अपने हाथ के काम की उपासना करते हैं!''

प्रश्न करने वाला वचन

''अपने आपको बुद्धिमान बताकर मूर्ख बनने'' के शब्द (आयत 22) केवल एक आरम्भिक वाक्य थे। पौलुस ने इस वाक्य को यह प्रमाण देते हुए कि यह कितने मूर्ख बन गए थे, उन्होंने कहा ''अविनाशी परमेश्वर की महिमा को नाशवान मनुष्य, और पक्षियों, और चौपायों, और रेंगने वाले जन्तुओं की मूरत की समानता में बदल डाला'' (आयत 23)।

परमेश्वर ने मनुष्यों में आराधना की आवश्यकता डाल दी। संसार में कहीं भी चले जाएं आपको अपने से बड़ी शक्ति की आराधना करने के विश्वव्यापी आग्रह का प्रमाण मिल ही जाएगा। जब मनुष्य जाति ने सच्चे परमेश्वर को ठुकरा दिया, तौ भी आराधना करने की इच्छा लोगों के मनों में बनी रही। अपनी इस इच्छा की पूर्ति के लिए उन्होंने बनावटी ईश्वर बना लिए, उन्हें दर्शाने के लिए मूर्तियां बना लीं और उन मूर्तियों की पूजा करने लगे।

यहूदियों को स्वयं भी परमेश्वर के साथ अपनी वाचा के आरम्भ से लेकर (निर्गमन 32) विभाजित राज्य के काल तक मूर्तिपूजा से संघर्ष करना पड़ा था (1 राजाओं 12)। रोमियों 1:23 में ऐसी ही भाषा का इस्तेमाल करते हुए भजनकार ने लिखा कि ''उन्होंने अपनी महिमा अर्थात परमेश्वर को घास खाने वाले बैल की प्रतिमा से बदल डाला'' (भजन संहिता 106:20)।

बाइबल में मूर्तिपूजा पर सबसे ज़बर्दस्त हमलों में से एक यिर्मयाह 10 में मिलता है। नबी ने घोषित किया कि मूर्तिपूजक लोग ''पशु सरीखे निरे मूर्ख हैं'' और ''ज्ञान रहित हैं'' (आयतें 8, 14)। लकड़ी की बनाई मूर्तियों के बारे में उसने कहा, ''मूरत तो वन में किसी का काटा हुआ

काठ है, जिसे कारीगर ने बसीले से बनाया है'' (आयत 3)। उसने लिखा, ''लोग उस [मूर्ति] को सोने चांदी से सजाते और हथोड़े से कील ठोंक-ठोंक कर दृढ़ करते हैं कि वह हिल-डुल न सके'' (आयत 4)। इन मूर्तियों की तुलना उसने ''खेत में खड़े पुतले'' से की क्योंकि ''ये बोल नहीं सकतीं'' (आयत 5)। यहां तक कि मूर्तियों को ''उठाए फिरना पड़ता है, क्योंकि वे चल नहीं सकतीं'' (आयत 5)। उसने यह भी लिखा कि ''अपनी खोदी हुई मूर्तों के कारण सब सुनारों की आशा टूटती है क्योंकि ... उनमें सांस ही नहीं है'' (आयत 14)।

मनुष्यजाति ने अपनी मूर्तियों के लिए परमेश्वर की महिमा को ''बदल डाला'' (allasso) था (रोमियों 1:23क)। NCV में इस प्रकार है ''उन्होंने परमेश्वर की महिमा का सौदा किया। मूर्तियों की पूजा के लिए।'' जिसे यह पता न हो कि उसके पास की चीज़ की क्या कीमत है वह उसे कौड़ियों के भाव बेच डालेगा। उदाहरण के लिए कोई बच्चा चमकती हुई चपटी चीज़ देखकर बहुमूल्य मोती दे सकता है। मैंने जीवन में कुछ बुरे सौदे किए हैं। आपने भी किए होंगे। अन्यजातियों ने सब बुरा सौदा किया था। उन्होंने झूठ के लिए परमेश्वर की सच्चाई को बेच डाला था। वास्तव में उन्होंने सच्चे, अविनाशी, प्रतापी परमेश्वर को झूठी, नाशवान, बेकार मूर्तियों में बदल डाला था।

याद रखें कि जब उन्होंने परमेश्वर को ठुकरा दिया तो उनके मन अंधेरे हो गए थे। अंधेरे में देखता हुआ बच्चा हर प्रकार की काल्पनिक, भयभीत करने वाले आकारों की कल्पना करता है। अंधकार से भरे मनों वाले लोगों द्वारा सर्वशक्तिमान को देखने की कोशिश करने पर भी ऐसा ही हुआ था। उन्होंने ''नाशवान मनुष्य, और पक्षियों, और चौपायों, और रेंगनेवाले जन्तुओं'' की शक्ल वाले अपने देवता बना लिए (आयत 23ख)। पौलुस की बात का उदाहरण सब के लिए स्पष्ट था:

- ''मनुष्य'': रोमी लोग कैसर की पूजा करते थे; यूनानी लोग अपने देवताओं को मानवीय रूप में देखते थे।
- ''पक्षियों'': मिस्री लोग पारस जाति के पक्षी सहित कई पक्षियों की पूजा करते थे।
- ''चौपायों'': मिस्री लोग बैल की पूजा करते थे; यहूदियों ने सोने के अपने बछड़ों के आगे माथा टेका था।
- ''रेंगनेवाले जन्तुओं'': अश्शूरी लोग पेट के बल चलने वाले जीवों की पूजा करते थे; मिस्री लोग जिब्रैल (स्कैरब) की पूजा करते थे।

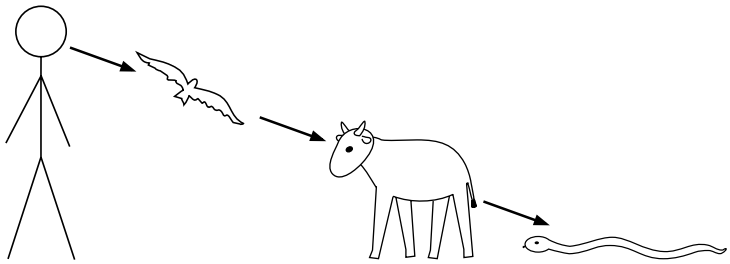

उनका मार्ग नीचे की ओर जाता जा रहा था, चैस्टर क्विंनी ने लिखा है, वे परमेश्वर को दो टांगों पर ले आए, फिर चारों टांगों पर नीचे को, और फिर पेट के बल ले आए![29] उनके मन इतने अंधेरे हो गए कि अन्त में वे खटमलों की पूजा करने लगे!

आयत 25 में पौलुस ने फिर ''बदल डाला'' शब्द का इस्तेमाल किया: ''क्योंकि उन्होंने परमेश्वर की सच्चाई को बदलकर [*metallasso*] झूठ बना डाला'' (आयत 25)। NEB में कहा गया है कि उन्होंने सच्चे परमेश्वर की अदला-बदली कर डाली है। NASB में कहा गया है कि उन्होंने ''एक झूठ'' के लिए परमेश्वर का सौदा कर लिया, परन्तु यूनानी धर्मशास्त्र का मूल अनुवाद होगा ''झूठ।'' जहां तक पौलुस को चिंता थी, परमेश्वर के प्रकाशन का ठुकराया जाना जो मूर्तिपूजा का कारण बनता है, इसे ''झूठ'' कहा गया। जब लोगों ने ''झूठ'' को स्वीकार कर लिया तो उन्होंने ''सृष्टि की उपासना और सेवा की, न कि उस सृजनहार की जो सदा धन्य है'' (आयत 25ख)। उन्होंने उसे ऊंचा किया जिसे बनाने वाले से ऊपर किया गया था।

मूर्तिपूजा पर पौलुस के लिए पौलुस की निंदा को पढ़ते हुए हमें कुछ विस्तृत खतरों से सावधान रहने की आवश्यकता है। एक खतरा यह है कि हो सकता है कि हम अपने विचारों को पहली सदी के विचारों से मिला लें। मूर्तियों की पूजा आज भी आम है। कई देशों में यह दूसरे देशों की अपेक्षा अधिक सामने आती है, पर पाई हर जगह जाती है। स्पष्टतया कइयों को इसे छोटा करके विचार करना कठिन लगेगा; वे उस देवता या देवताओं को प्राथमिकता देते हैं जिन्हें वे देख सकते हैं। परमेश्वर की आराधना करने के लिए जिसे देखा नहीं जा सकता, मजबूत और पक्का विश्वास आवश्यक है। नया नियम आज भी हमें सिखाता है कि ''अपने आपको मूर्तों से बचाए रखो'' (1 यूहन्ना 5:21)।

एक खतरा यह है कि नकली देवताओं के लिए सच्चे परमेश्वर को ठुकराने की बात सोचकर हम अपने विचार मूर्ति की पूजा के विचारों से मिला लेंगे।

> किसी ने कहा है, ''जो तुम्हारा हाथ पकड़ता है और भरोसा रखता है, वही तुम्हारा ईश्वर है।'' जिसे तुम अपने जीवन में पहल देते हो, वही तुम्हारा ईश्वर है। हो सकता है कि हम पत्थर की आंखों वाले घड़े हुए पत्थर के बड़े-बड़े पक्षियों या पत्थर की आंखों वाली लकड़ी की मूर्तियों के आगे न झुकें, पर हम फिर भी यहोवा के साथ मुकाबला करने वाले अन्य देवताओं के आगे झुकते हैं। हो सकता है कि हमने सोने के बछड़े के सामने माथा न टेका हो, पर हम फिर भी सोने की पूजा कर सकते हैं। हो सकता है कि हमने बाल की घड़ी हुई मूर्ति के आगे गुटने न टेके हों, पर हमारे पैसों पर भी तो उकेरी हुई मूर्तियां हैं। क्या हम में से कोई कह सकता है कि हमने परमेश्वर की आराधना के ऊपर आकांक्षा, व्यर्थता या स्वयं को नहीं रखा है? इस जीवन की बहुत सी चीज़ें अच्छी हैं पर वे *परमेश्वर* नहीं हैं।[30]

सृष्टिकर्त्ता के बजाय सृष्टि की सेवा करने का बहुत से लोगों का ढंग परमेश्वर की इच्छा जानने और उसे प्रसन्न करने की कोशिश करने के बजाय अपनी इच्छाओं के बजाय अपने आप की सेवा करना और अपनी इच्छाओं को पूरा करने की कोशिश करना है। बहुत से लोग अपने आपको आगे करते हैं और परमेश्वर को पीछे। उनका व्यवहार ''परमेश्वर छोटा, हम बड़े'' बन जाता है।

यह विचार करते हुए कि किस प्रकार मनुष्य जाति परमेश्वर को ठुकराकर उसकी महिमा करने में नाकाम रही, पौलुस अपने आपको रोक नहीं पाया। आयत 25 को उसने ''उस सृजनहार की जो सदा धन्य है। आमीन'' शब्दों से समाप्त किया। अनुवादित शब्द ''धन्य'' (*eulogetos*)

शब्द से जुड़ा है, जिससे हमें अंग्रेज़ी का शब्द ''eulogy'' (''एक अच्छा शब्द'') मिला है। इसका अर्थ ''महिमा किए जाने के योग्य'' है।[31] नये नियम में इसे केवल परमेश्वर पर लागू किया गया है। फिलिप्प के संस्करण में, जो केवल सदा सदा के लिए आराधना के योग्य है, आमीन है।

निर्विवाद निष्कर्ष

अगले दो पाठों में हम अन्यजाति संसार के पौलुस के विनाशकारी मूल्यांकन को जारी रखेंगे। परन्तु इस पाठ में बताई गई आयतों से हमें यह विश्वास हो जाना चाहिए कि पौलुस ने अपना अधिकार आगे दे दिया। अपने मन में मैं उसे मूर्तिपूजा की शर्मनाक बातें बताते हुए यह निष्कर्ष निकालते देखता हूं, ''दोषी पाया गया''!

सारांश

शिकागो की धूप भरे एक दिन में, एक कठोर व्यक्ति व्यस्त चौराहे पर खड़ा था। पैदल चलने वालों को जल्दी करने पर वह हर एक की ओर इशारा करके ऊंचे स्वर से कहता, ''दोषी!'' कई लोग उसे घूरने के लिए रुक गए। फिर, उन्होंने आंखें घूमाईं और आगे बढ़ गए। एक आदमी को अपने साथी को यह कहते सुना गया, ''उसे कैसे मालूम?''[32]

हो सकता है कि आप और मैं कठोर दिखने वाले आदमी के सामने न आए हों, जो इशारा कर रहा था; पर यदि रोमियों 1:18-25 पर अध्ययन करते हुए हम अपने आपके साथ ईमानदार हैं, तो हमने निष्कर्ष निकाला है कि हम, भी, दोषी हैं। हमने परमेश्वर द्वारा दी गई सच्चाई की हर बात नहीं मानी है। कई बार परमेश्वर को अपने विचारों और अपने जीवनों में से निकाल दिया। हमने अपने बनाने वाले से पहले अपने आपको रखा। हम भी, ''दोषी हैं!''

आज भी यह उतना ही सच है जितना यह 1900 साल पहले था। ''परमेश्वर का क्रोध उन लोगों की सब प्रकार की अभक्ति और अधर्म पर स्वर्ग से प्रकट होता है'' (रोमियों 1:18)। आज भी यह स्पष्ट है कि ''जीवते परमेश्वर के हाथों में पड़ना भयानक बात है'' (इब्रानियों 10:31)। यदि आप परमेश्वर के अनुग्रह के लिए अपनी आवश्यकता को समझते हैं, तो मेरा आपसे आग्रह है कि प्रेम करने वाले, भरोसा करने वाले और आज्ञाकारी विश्वास में आज ही उसके पास आ जाएं (प्रेरितों 2:36-38)।

सिखाने वालों तथा प्रचारकों के लिए नोट्स

इस पाठ का एक और सम्भावित शीर्षक ''पहले, बुरी खबर'' है।[33] ''वे जो सच्चाई को दबाते हैं'' (आयत 18) और ''झूठ के लिए परमेश्वर की सच्चाई को बदलना'' (आयत 25) पर विषयात्मक पाठों के लिए वचन पाठों के रूप में रोमियों 1:18-25 की दो आयतों का इस्तेमाल किया जा सकता है।

टिप्पणियां

[1]जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट, *द मैसेज ऑफ़ रोमन्स: गॉड'स गुड न्यूज़ फ़ॉर द वर्ल्ड,* दि बाइबल स्पीक्स टुडे सीरीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1994), 69. [2]वारेन डब्ल्यू. वियर्सबे, *दि बाइबल एक्सपोज़िशन कमैंट्री,* अंक 1 (व्हीटन, इलिनोइ: विक्टर बुक्स, 1989), 518. [3]जैसा कि हम देखेंगे कि पौलुस आमतौर पर सम्भावित विपत्तियों का अनुमान लगा लेता था। [4]डब्ल्यू. ई. वाइन, मैरिल एफ. अंगर, एण्ड विलियम व्हाइट जूनि., *वाइन'स कम्पलीट एक्सपोज़िटरी डिक्शनरी ऑफ़ ओल्ड एण्ड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* (नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985), 651. [5]वही, 653. [6]पाप के विरुद्ध ''सच्चा क्रोध'' जैसी कोई चीज़ है, परन्तु हमारा अधिकतर क्रोध स्वार्थी होता है। [7]वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट एण्ड अदर अरली क्रिश्चियन लिटरेचर,* द्वितीय संस्क., संशो. विलियम एफ. अर्ंट एण्ड एफ. विल्बर.गिंगरिच (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 1957), 582. [8]फोर्ट वर्थ, टैक्सस, 16 जनवरी 2002 को दिया गया प्रवचन, डेव मिलर, ''द मीनिंग ऑफ़ रोमन्स (3)।'' [9]लियोन मौरिस, *दि एपिस्टल टू द रोमन्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 76. [10]डी. स्टुअर्ट ब्रिस्को, *मास्टरिंग द न्यू टैस्टामेंट: रोमन्स,* दि कम्युनिकेटर'स कमैंट्री सीरीज़ (डलास: वर्ड पब्लिशिंग, 1982), 40.

[11]स्टॉट, 72. [12]ध्यान दें कि ''परमेश्वर ने इसे स्पष्ट बनाया'' है। पौलुस का ज़ोर इस तथ्य पर है कि परमेश्वर ने अपने आप को प्रकट किया, न कि मनुष्य ने प्रकृति को देखकर ''खोज'' की। जैसा कि प्रकृति धर्मशास्त्र में माना जाता है। [13]जेम्स बर्टन कॉफ़मैन, *कमैंट्री ऑन रोमन्स* (आस्टिन, टैक्सस: फर्म फाउंडेशन पब्लिशिंग हाउस, 1973), 32-38. [14]हेफोर्ड ई. लब्बॉक, *प्रीचिंग वेल्यू इन दि एपिस्टल आफ़ पॉल,* अंक 1, *रोमन्स एण्ड फर्स्ट कुरिन्थियंस* (न्यू यॉर्क: हॉर्पर एण्ड ब्रदर्स, 1959), 23. कइयों का मानना है कि पौलुस कह रहा था कि बेशक अन्यजातियों में सच्चाई को ''पकड़ा'' था पर वे सच्चाई से जीवन व्यतीत नहीं कर रहे थे। यानी इस प्रकार उनके जीवन असंगत थे। परन्तु संदर्भ में असंगत के बजाय अज्ञानता (जानबूझकर अनजान होना) पर ज़ोर है। [15]*दि एनलेटिकल ग्रीक लैक्सिकन* (लंदन: सेमुएल बैगस्टर एण्ड सन्स, 1971), 208. [16]लियोन मौरिस, *दि एपिस्टल टू दि रोमन्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 82. [17]वाइन, 178-79. *Theiotes* को *theotes* से अलग किया जाना चाहिए (कुलुस्सियों 2:9) में मिलता है। रोमियों 1 और कुलुस्सियों 2 में KJV में दोनों का अनुवाद ''Godhead'' किया गया है; परन्तु यह पहला शब्द परमेश्वर की विशेषताओं को बताता है जबकि दूसरा शब्द परमेश्वर के सार को। ''Godhead'' ''God-hood'' के अर्थ वाले एक पुराने अंग्रेज़ी शब्द से लिया गया है। [18]*इलस्ट्रेटिंग पॉल'स लिटरेचर टू दि रोमन्स,* सं. क. जेम्स एफ. हाईटओवर (नैशविल्ले: ब्रॉडमैन प्रैस, 1984), 20 में बिल ब्रस्टर से लिया गया। [19]जिम मैक्गुइगन ने ध्यान दिलाया कि केवल प्रकृति से हम एकेश्वरवाद को साबित नहीं कर साकते। (जिम मैक्गुइगन, *दि बुक ऑफ़ रोमन्स,* लुकिंग इन टू दि बाइबल सीरीज़ [लब्बॉक, टैक्सस: मोनटैक्स पबिलशिंग कं., 1982], 76-77.) परमेश्वर केवल एक है, परन्तु पौलुस यहां किसी और विषय पर चर्चा कर रहा था। [20]जिम टाउनसेंड, *रोमन्स: लेट जस्टिस, रोल* (एलजिन, इलिनोइस: डेविड सी. कुक पब्लिशिंग कं., 1988), 14 में उद्धृत।

[21]ब्रूस बर्टन, डेविड वीरमन, एण्ड नेल विलसन, *रोमन्स,* लाइफ एप्लीकेशन बाइबल कमैंट्री (व्हीटन, इलिनोइस: टिंडेल हाउस पब्लिशर्स, 1992), 28. [22]KJV ''vain'' है जिसका मूल अर्थ ''व्यर्थ'' या ''बेकार'' है। NKJV में ''futile in their thoughts'' है। [23]वाइन, 657. [24]वही, 246. [25]लातीनी में *homo* का अर्थ ''मनुष्य'' है और *sapiens* का अर्थ ''समझदार'' है। [26]काफ़मैन, 41. [27]जब आप इस पाठ का इस्तेमाल करें तो अपनी टिप्पणियों को उन परिस्थितियों के अनुकूल अपना लें जहां आप रहते हैं। आपको उदाहरण देने पड़ सकते हैं। [28]ग्लेन पेश ने जूडसोनिया चर्च ऑफ़ क्राइस्ट, जूडसोनिया आरकैंसा, 5 जनवरी, 2003 को संदेश दिया। [29]चेस्टर वारेन क्विम्बी, *दि ग्रेट रिडम्पशन* (न्यू यॉर्क: मैकमिलन कं., 1950), 45-46. [30]डेविड रोपर, *''दि डे क्राइस्ट केम (अगेन)'' एण्ड अदर सरमन्स* (डलास: क्रिश्चियन पब्लिशिंग कं., पृष्ठ नहीं) 64-65.

[31]जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे एण्ड फिलिप वाई, पैंडल्टन, *थस्सलोनियंस, कोरिन्थियंस, गलेशियंस एण्ड रोमन्स* (सिनसिटी: स्टैंडर्ड पब्लिशिंग, तिथि नहीं), 305. [32]*इलस्ट्रेशन पॉल'स लैटर्स टू दि रोमन्स,* कम्प. जेम्स एफ. हाईटओवर (नैशविल्ले: ब्रॉडमैन प्रैस, 1984), 20-21 में अल्टन एच. मैक्क्वरन से लिया गया। [33]ब्रिस्को, 38.